हिंदी दैनिक
राईट मीडिया समाचार
खबरों की तह तक...
आपंत्रण मूल्य 2₹
वर्ष :15 अंक -316 मुंबई, शुक्रवार 01 जुलाई 2022 पृष्ठ - ८

मुसलमान कभी बेरोजगार नहीं रह सकता क्योंकि वो हिन्दुओं की कमजोरी समझ चुका हैं-भवानजी

केंद्र की कांग्रेस सरकार ने मोदीजी को गुजरात में ही घेरने के लिए संविधान / न्यायपालिका का बलात्कार किया था- बाबूभाई भवानजी

मुंबई महानगरपालिका के पूर्व उपमहापौर बाबूभाई भवानजी ने एक प्रसिद्धी पत्र में कहा कि हर मुसलमान बचपन से ही कोई न कोई हुनर सीख लेता है और बड़े आराम से गुजारा कर लेता है कबाड़, प्लम्बर, पेंटर, नाई, राज मिस्त्री, कार वाशिंग, सायकिल रिपेयरिंग, सिलाई, कढ़ाई, आदि सीख ही लेता है और अगर पढ़ाई में ज्यादा होशियार है तो डाक्टर इंजीनियर पत्रकार संपादक जज वकील बनने की कोशिश करता है वरना सरकारी नौकरी की परवाह नहीं करता। आज फिल्म और टीवी इंडस्ट्री में मुसलमानों ने कैमरामैन स्क्रिप्ट राइटिंग अभिनेता निर्माता निर्देशक एडिटिंग हर विधा में कब्जा कर लिया है जबकि ज्यादातर हिंदू डिग्री और सरकारी नौकरी के चक्कर में अपना समय खराब करते रहते हैं सिर्फ इस आशा में कि एक बार सरकारी नौकरी मिल जाये तो अच्छा दहेज मिल जायेगा और सामाजिक रूतबा दिखाने का मौका मिलेगा, पूरी लाइफ कम मेहनत किए एस आराम से कटेगी.... इस चक्कर में वो चौंतीस साल तक शादी नहीं करेंगे और नौकरी की खोज में लगे रहेंगे और इस चौंतीस साल की उम्र तक चाहे वो क्लर्क की परीक्षा भी पास नहीं कर पाया हो लेकिन प्रचार प्रसार यही रहता है कि वो आईएएस या

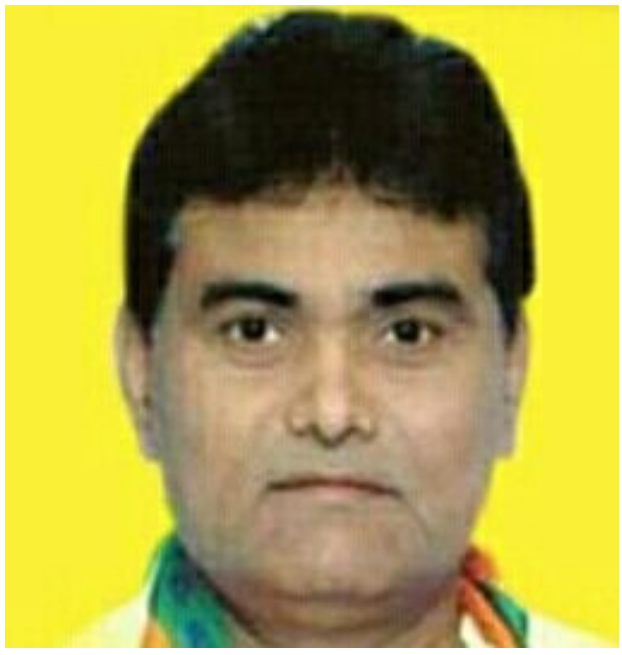

क्लास वन नौकरी की तैयारी कर रहा है। इसीलिये आज तक कभी भी किसी मुस्लिम नौजवान किसान मजदूर किसी की भी आत्महत्या की खबरें नहीं आती हैं और इस तरह की निन्यानवे प्रतिशत मामले सिर्फ और सिर्फ हिन्दुओं के होते हैं।और हिन्दू सरकारी नौकरी ही करना चाहता हैचाहे वो चपरासी ,ग्रुप ं हो या सफाईकर्मी की होक्योंकि हिन्दूओ का बड़ा तबका आलसी और हरामखोर हो चुका है।हिन्दू मेहनत का काम करके इससे ज्यादा कमा सकता है मगर उसे आलसवाला और कुर्सी तोड़ने वाला काम चाहिए और ये काम भी न मिले तो वो जहर खा लेता है, सड़कों पर गले में बेरोजगारी की तख्तियां लटका कर प्रदर्शन करता है, ट्रेनों में आग लगाता है और देश में काम कर रही बेहतर सरकार को ही गिराने के लिए पटरिया उखाड़ता है..... अगर सामर्थ्य है तो अच्छी नौकरी के लिए ट्राई करें अन्यथा जीवन को सम्मान पूर्वक जीने और अपना घर चलाने के लिए करने के लिए असंख्य कार्य है, हिंदू युवाओं को आराम तलबी और सिर्फ सरकारी नौकरी वाली आभासी धारणा से मुक्त होना जरूरी है। धर्म और संस्कारों को साथ लेकर जीना सीखो, कभी मजबूर नहीं होना पड़ेगा।

खतरे में जिंदगी! 187 खतरनाक इमारतों में रह रहे हैं लोग

मुंबई-कुर्ला और कालबादेवी में इमारत हादसों के बाद पुरानी और जर्जर इमारतों का मसला फिर सुर्खियों में आ गया है। मुंबई में अभी भी 187 निजी इमारतें खतरनाक अवस्था में हैं, जिसमें सैकड़ों लोग अपनी जान जोखिम में डालकर रह रहे हैं। शहर में कुल 337 निजी इमारतें खतरनाक अवस्था में थीं, जिसमें से 29 इमारतों को जमींदोज करने में मुंबई मनपा को सफलता मिली है। इनमें अभी भी 308 खतरनाक इमारतें खड़ी हैं।

मुंबई मनपा ने हर साल की तरह इस बार भी मानसून से पहले मुंबई कि धोखादायक इमारतों का सर्वेक्षण किया था। इस सर्वे में 337 इमारतें धोखादायक पाई गईं। सी- वन यानी अति खतरनाक इमारतों को गिराना जरूरी होता है। पिछले वर्ष मुंबई में 462 इमारतें खतरनाक पाई गई थीं। अब तक 136 इमारतों को गिराने में मुंबई मनपा को सफलता मिली है। मनपा की नीति के अनुसार 30 साल पुरानी इमारतों का स्ट्रक्चरल ऑडिट किया जाता है। इनमें जो इमारतें खतरनाक अवस्था में पाई जाती हैं, उन्हें खाली करने के लिए 354 की नोटिस दी जाती है। इस साल भी सर्वेक्षण करके खतरनाक इमारतों में रहनेवालों को घर खाली करने की नोटिस दी गई है। हालांकि कुछ इमारतों के निवासी आपत्ति जताते हुए कोर्ट की शरण लेते हैं। कुछ पालिका के तकनीकी सलाहकार समिति से गुहार लगाते हैं। इसकी वजह से इमारत उसी अवस्था में रह जाती है। किसी इमारत के संबंध में कोर्ट द्वारा स्थगन आदेश दिए जाने के बाद वह इमारत गिराई नहीं जा सकती। कानूनी पेंच में फंसी तकरीबन 132 इमारतें खतरनाक अवस्था में खड़ी हैं।

संपादकीय...

रसोई पर मार

दूध, डबल रोटी से लेकर आटा, चावल, दालें और खाने के तेल तक के दाम जिस रफ्तार से बढ़ते गए हैं, वह कोई मामूली नहीं बात नहीं है। यह सीधे-सीधे गरीब की रसोई पर मार है।

किसी न किसी रूप में खाने-पीने का सामान और रोजमर्रा के इस्तेमाल वाली चीजें जिस तरह से महंगी होती जा रही हैं, उसका सीधा असर आम आदमी पर ही पड़ रहा है। अभी तक तो महंगाई बढ़ने का सबसे बड़ा कारण पेट्रोल और डीजल के लगातार बढ़ते दाम ही बना हुआ था। इसका असर खुदरा और थोक महंगाई के रूप में सामने आ रहा है। पर महंगाई तब ज्यादा मारती है जब सब्जियां, फल और आम आदमी की थाली से जुड़े उत्पाद महंगे हो जाते हैं। काफी समय से देखने में आ रहा है कि चीजों के दाम लगातार बढ़ रहे हैं।

दूध, डबल रोटी से लेकर आटा, चावल, दालें और खाने के तेल तक के दाम जिस रफ्तार से बढ़ते गए हैं, वह कोई मामूली नहीं बात नहीं है। यह सीधे-सीधे गरीब की रसोई पर मार है। अब बची-खुची कसर वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) ने पूरी कर दी है। जीएसटी परिषद ने अब पैकेट में आने वाले दूध, दही, छाछ, पनीर, आटा, मुरमुरे, गुड़, सोयाबीन, मोटा अनाज, मांस, मछली, सूखी फलियों जैसी खाद्य वस्तुओं को पांच फीसद कर दायरे में रख दिया है। ये बढ़ी हुई दरें अठारह जुलाई से लागू हो जाएंगी। यानी इस महीने से ही अब खाने-पीने की तमाम चीजों पर लोगों का खर्च और बढ़ जाएगा। सवाल इस बात का है कि अगर दूध, दही और अनाज जैसी चीजों के दाम भी इतने ज्यादा बढ़ने लगेंगे कि इन्हें खरीदना भी भारी पड़ने लगे तो लोग जी कैसे पाएंगे? वैसे भी कुछ महीने पहले ज्यादातर दूध उत्पादक कंपनियों ने दाम पहले ही बढ़ा दिए। गरीब परिवार के लिए तो पांच फीसद दाम बढ़ना भी बड़ी बात है। अभी तक कंपनियां कच्चे माल की कमी, लागत में बढ़ोतरी और माल ढुलाई में वृद्धि जैसे कारणों का हवाला देकर दाम बढ़ाती रहीं। यह संकट ज्यादा गंभीर इसलिए है कि इस वक्त करोड़ों लोग बेरोजगार हैं और उनके पास आमदनी का स्थायी जरिया नहीं है। आबादी का बड़ा हिस्सा जैसे-तैसे दो वक्त की रोटी भी मुश्किल से जुटा पा रहा है। गैस सिलेंडर हैं, पर उसे दोबारा भरवाने के पैसे नहीं हैं। पिछले दो वर्षों के दौरान रसोई गैस सिलेंडर के दाम जिस तेजी से बढ़ते रहे हैं, उससे औसत परिवारों की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। आम परिवार के लिए तो आटा, चावल, दाल, खाने का तेल, साग-सब्जी, फल और दूध महंगा होना ही महंगाई की मार है। गौरतलब है कि पांच साल पहले जब जीएसटी व्यवस्था लागू की गई थी, तब सरकार ने कहा था कि इससे लोगों को महंगाई से राहत मिलेगी। लेकिन ऐसा होता दिख नहीं रहा। बल्कि गरीबों की जो चीजें अभी बिना पांच फीसद कर के मिल रही थी, अब वे भी पांच फीसद महंगी मिलेंगी। महंगाई बढ़ना तब अच्छा माना जाता है और व्यावहारिक दृष्टि से सरकार और लोगों के लिए भी तभी लाभकारी होता है जब लोगों के पास रोजगार हो और नियमित आय के साधन हों। लेकिन आज हालात ऐसे नजर आ नहीं रहे। ऐसे में रोजमर्रा के इस्तेमाल की चीजों, खासतौर से रसोई के सामान को जीएसटी दायरे में लाना लोगों पर और बोझ डालना है। लंबे समय से पेट्रोल और डीजल को जीएसटी के दायरे में लाने का मामला लटका हुआ है। अगर ये दोनों उत्पाद जीएसटी के दायरे में ले आए जाते हैं तो निश्चित ही इनके दाम कम होंगे और महंगाई दर नीचे आएगी।

प्लास्टिक पर पाबंदी की चुनौती

तरक्की के तमाम दावों के बावजूद दुनिया अब तक प्लास्टिक कचरे के निस्तारण का सटीक उपाय नहीं तलाश सकी है। परिणाम यह है कि दुनियाभर में प्लास्टिक कचरे के इतने ढेर लग गए हैं कि अगर सारा कचरा एक साथ रख दिया जाए तो माउंट एवरेस्ट से तीन गुना विशाल पहाड़ बन सकता है।

आज यानी एक जुलाई से एक बार उपयोग करने के बाद फेंक दिए जाने वाले प्लास्टिक (सिंगल यूज प्लास्टिक) पर प्रतिबंध अमल में आ जाएगा। प्लास्टिक की ऐसी वस्तुओं में पालिथीन की थैली से लेकर पानी की बोतलें, प्लास्टिक के कप, दोने, प्लेट और स्ट्रा जैसी चीजें शामिल हैं। इसके पहले भी १५ अगस्त २०१९ को देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने दो अक्तूबर २०१९ से एकबारगी इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध की बात कही थी। लेकिन तब यह संभव नहीं हो पाया, क्योंकि प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने की बात जितनी आसान प्रतीत होती है, यह उतनी आसान है नहीं। लेकिन अब सरकार ने जिस तरह का संकल्प और सख्ती दिखाई है, उससे यह साफ हो गया है कि अब कदम पीछे नहीं जाने वाले।

प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने में एक बड़ी बाधा तो यही है कि देश में प्लास्टिक उद्योग से जुड़े अनेक लोगों के बेरोजगार होने की बात कही जा रही है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण मंडल के अनुसार इस समय देश में करीब सात सौ ऐसी बड़ी इकाइयां हैं जो एक बारगी उपयोग वाले प्लास्टिक के सामान बना रही हैं। बड़े व्यवसायी या उद्योगपति तो फिर भी वैकल्पिक व्यवस्थाओं की तरफ अग्रसर हो सकते हैं, लेकिन जिन छोटे व्यवसायियों का परिवार इन चीजों के व्यापार पर ही निर्भर है, उनके सामने रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो सकता है।

यह स्थिति सरकार को भी दुविधा में डालती है क्योंकि हर लोकतांत्रिक व्यवस्था सबसे उपेक्षित वर्ग के हितचिंतन के प्रति भी प्रतिबद्ध होती है और होनी भी चाहिए। बाजारों में ऐसे कई लोगों को देखा जा सकता है जो साइकिल पर थैलियों के बंडल रख कर अलग-अलग दुकानदारों तक जाते हैं और उनकी जरूरत का सामान उन्हें देकर अपने परिवार के पोषण का बंदोबस्त करते हैं। ऐसे में प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध लाखों लोगों को विचलित कर सकता है। अभी तो स्थिति यह है कि कुछ जानी-मानी कंपनियों ने भी सरकार से इस फैसले पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया है क्योंकि उनके पास अपने उत्पाद की पैकेजिंग आदि के लिए उचित विकल्प भी नहीं हैं।

पिछले करीब दो-तीन दशकों में प्लास्टिक लोगों की आदतों और जीवनशैली में इस तरह शामिल हो गया है कि इसके बिना सहज जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। आज कपड़े का थैला साथ लेकर चलना बीते जमाने की बात लगती है। लोग उम्मीद करते हैं कि दुकानदार ही उन्हें थैला (केरी बेग) देगा। अब चूंकि प्लास्टिक की थैली अपेक्षाकृत सस्ती होती है, तो दुकानदार थैली में सौदा दे देता है। कागज की थैलियां आमतौर पर मजबूत नहीं होतीं और कपड़े के थैले की लागत इतनी होती है कि वह सामान्य ग्राहक को बिदका सकती है। ऐसे में दुकानदार और ग्राहक दोनों ही प्लास्टिक की थैली के मोह से मुक्त नहीं हो पाते।

फिर संभावना यह भी है कि प्लास्टिक के विकल्प के तौर पर जिन साधनों को अपनाया जाए, वे पर्यावरण के लिए प्लास्टिक के उपयोग से भी अधिक खतरनाक हों। मान लीजिए कि आम आदमी कागज के थैले के उपयोग को अपनी आदत बना लेता है। हम सब जानते हैं कि कागज का उपयोग जितना बढ़ेगा, उतना ही पेड़ों के अस्तित्व पर संकट बढ़ता जाएगा। ऐसे में कागज के उपयोग को अत्यधिक प्रोत्साहित करने को भी बहुत अच्छा विकल्प नहीं माना जा सकता। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि यदि लोगों पर अतिरिक्त दबाव डाल कर उन्हें प्लास्टिक का उपयोग छोड़ने पर विवश किया गया तो संभव है कि वे प्रतिक्रिया स्वरूप ऐसे विकल्पों को अपना लें, जिनके उत्पादन में अधिक हानिकारक रसायनों का उपयोग होता हो और जो पर्यावरण के लिये लगभग उतने ही हानिकारक हों। ऐसे में बेहतर तो होगा कि लोगों को प्लास्टिक के नुकसान के प्रति जागरूक किया जाए और उन्हें पर्यावरण अनुकूल विकल्प अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। लेकिन कई बार लोगों को उनके हित की बात समझाने के लिए भी दबाव का सहारा लेना पड़ता है। सन १९०७ में जब न्यूयार्क के लियो बैकेलैंड नामक वैज्ञानिक ने सिंथेटिक प्लास्टिक बनाया था और उसे बैकेलाइट नाम दिया था, तब किसी ने शायद कल्पना भी नहीं की होगी कि देखते ही देखते प्लास्टिक दुनियाभर में पर्यावरण के लिये एक बड़ा खतरा बन जाएगा। पालिथीन का आविष्कार तो सन १९३३ में संयोगवश हुआ। लेकिन अपने हल्केपन और तंतुओं की मजबूती के कारण यह देखते ही देखते लोकप्रिय हो गया। सन १९६५ में स्वीडन की एक कंपनी ने पालिथीन के थैले का पेटेंट तक ले लिया। धीरे-धीरे पालिथीन जीवन के अन्य क्षेत्रों पर भी हावी होता चला गया और कपड़े के थैलों, कागज की थैलियों को प्लास्टिक थैलियों ने प्रचलन से लगभग बाहर ही कर दिया। देखते ही देखते प्लास्टिक उद्योग दुनिया का एक प्रमुख उद्योग हो गया। विकासशील देशों में तो आबादी के एक बड़े हिस्से की आजीविका इसके उत्पादन और बेचान से जुड़ी है।

लेकिन प्लास्टिक के उपयोग के अपने खतरे भी हैं। दुनिया ने पहले अपनी सुविधाओं को देखते हुए प्लास्टिक को बहुत मन से अपनाया और इससे पैदा होने वाली चुनौतियों की तरफ ध्यान नहीं दिया। नतीजा यह रहा कि देखते ही देखते जगह-जगह प्लास्टिक के कचरे के ढेर लगने लगे। मुसीबत यह है कि प्लास्टिक का पूरी तरह निस्तारण होने तक पीढ़ियां गुजर जाती हैं। प्लास्टिक कचरे को जलाना तो पर्यावरण के लिए और भी नुकसानदायक है क्योंकि प्लास्टिक को जलाने से बहुत-सी जहरीली गैसें निकलती हैं जो वातवरण को दम घोंटू बना देती हैं। दुनिया तरक्की के तमाम दावों के बावजूद अब तक प्लास्टिक कचरे के निस्तारण का सटीक उपाय नहीं तलाश सकी है। परिणाम यह है कि दुनिया में प्लास्टिक कचरे के इतने ढेर लगे हैं कि यदि सारा कचरा एक साथ रख दिया जाए तो माउंट एवरेस्ट से तीन गुना विशाल पहाड़ बन सकता है।

प्लास्टिक कचरे का ढेर लगाने का नतीजा हम देश की सड़कों पर आसानी से देख सकते हैं। आए दिन अखबारों में इस आशय की खबरें छपती हैं कि किसी गाय के पेट से डाक्टरों ने बड़ी मात्रा में जमा थैलियां निकालीं। पेट में पड़े प्लास्टिक के कारण हर साल हजारों पशु संक्रमित होते हैं और दम तोड़ देते हैं। शायद यही कारण है कि दुनिया अब प्लास्टिक का, विशेषकर एकबार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक सामान का उपयोग कम से कम करने के प्रति जागरूक हो रही है। महत्वपूर्ण यह है कि इस दिशा में विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों ने अधिक जागरूकता का प्रदर्शन किया है। सबसे पहले बांग्लादेश ने सन २००२ में प्लास्टिक की हल्की थैलियों पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाया था। केन्या ने सन २०१७ में एकबारगी उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगा दिया। जिंबाब्वे ने पोलीस्टिरीन नामक प्लास्टिक के डिब्बों पर २०१७ में प्रतिबंध लगाया और इस नियम का उल्लंघन करने वालों पर आर्थिक दंड भी आरोपित किया। ब्रिटेन ने प्लास्टिक की थैलियां काम में लेने पर कर लगा दिया। अमेरिका ने संघीय स्तर पर भले ही सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ कोई नीति नहीं बनाई, लेकिन वहां के कुछ राज्यों ने अपने स्तर पर प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने की दिशा में पहल की है। प्लास्टिक का बढ़ता हुआ उपयोग मानवता के हित में बिल्कुल नहीं कहा जा सकता। प्लास्टिक के उपयोग पर नियंत्रण करना मुश्किल हो सकता है, लेकिन असंभव तो मनुष्य के लिए कुछ भी नहीं होता, बशर्ते वह एक बार दृढ़ निश्चय कर ले। अगर सरकार के प्रयासों के साथ नागरिकों के स्तर पर पर्याप्त सहयोग मिले तो प्लास्टिक से मुक्ति संभव कैसे नहीं होगी?

SORROW INTO JOY

21ST TIME GOLD MEDLIST

CONTACT URGENTLY IF YOU ARE IN PROBLEM

All Problem Solve Expert in 31 Elam Prblem Like: Love Affair, Husband & wife Disputes, Court Case, Inter cast Love Marriage, Women Enemy, Real Estate, Business ets.

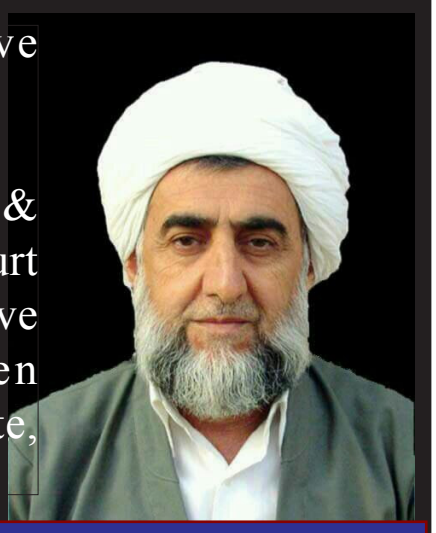

IF YOU HUSBAND, LOVER OR SON IN FAVOUR IN ANBODY'S INFLUNCE CALL ONCE

Cheated Lovers Call one
Baba Sumer Khan Bangali
Spl. Vashikaran & Muthkarni

9993727822

शिंदे के नाम का ऐलान कर फडणवीस ने रिमोट कंट्रोल अपने पास रखने में कामयाबी हासिल की - महेश तपासे

सलीम सैयद

मुंबईः राकांपा के मुख्य प्रवक्ता महेश तपासे ने देवेंद्र फडणवीस पर मुख्यमंत्री के रूप में अपने नाम की घोषणा कर एकनाथ शिंदे पर रिमोट कंट्रोल रखने का आरोप लगाया है।

हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि चुनाव आयोग किस समूह को मंजूरी देगा, एकनाथ शिंदे को मुख्यमंत्री बनाना भाजपा द्वारा एक पत्थर में दो-पक्षीय कार्यक्रम आयोजित करने का एक वास्तविक प्रयास है, महेश तपासे ने कहा।

यह पता नहीं है कि बीजेपी एकनाथ शिंदे को मुख्यमंत्री बनाकर स्वतंत्र फैसला लेने देगी या नहीं, लेकिन महेश तपासे ने कहा कि बीजेपी ने मुंबई, ठाणे, कल्याण-डोंबिवली नगर निगम में एकनाथ शिंदे का इस्तेमाल कर शिवसेना को खत्म करने की साजिश रची है. निगम।

मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को बधाई देते हुए महेश तपासे ने कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि रिमोट नागपुर से संचालित होगा।

स्वर्गीय अमरकांत झा की जयंती के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन

सलीम सय्यद

मुंबई : उत्तर मुंबई भाजपा का गढ़ है उत्तर मुंबई को भाजपा का गढ़ बनाने में कई वरिष्ठ नेताओं, परिवारों और कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है सबसे प्रामाणिक एवम् निष्ठावान नेताओं में से एक स्वर्गीय अमरकांत झा थे अमरकांत झा का हर कार्यकर्ता के घर तक जाकर हालचाल पूछना और आत्मीयता जताना एक सर्वविदित क्रम था।

कार्यकर्ता उन्हें एक बहुत लोकप्रिय वरिष्ठ नेता के रूप में प्यार करते थे अमरकांत झा ने अपनी सेहत की परवाह किए बगैर अपनी पार्टी के काम और सामाजिक कार्यों को आखिरी सांस तक जारी रखा अमरकांत झा जी का जून 2003 में निधन हो गया। अपने पीछे परिवार में उनके तीन बेटे हैं आशीष झा, सुधीर झा और अमित झा जो कि हर साल उनके जन्मदिन के अवसर पर रक्तदान शिविर आयोजित करते हैं सबसे छोटे सुपुत्रअमित झा पेशे से शिक्षक हैं उन्होंने कहा कि 'स्वर्गीय अमरकांत झा की जयंती के अवसर पर आज हमने प्रतिवर्ष की तरह रक्तदान शिविर का आयोजन किया। अपने सामाजिक कार्यों को जारी रखते हुए अपने पिता को श्रद्धांजलि देना ही यथोचित होगा।

रक्तदान शिविर का उद्घाटन विधायक गोपाल शेट्टी ने किया सांसद गोपाल शेट्टी ने सभी रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया रेलवे स्टेशन प्रबंधक सुश्री संध्या वर्मा को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष श्रीकांत पांडे, जिलाध्यक्ष महेश राउत, उत्तर भारतीय मोर्चा के जिलाध्यक्ष ब्रम्हदेव तिवारी, पूर्व पार्षद अंजलि खेडकर, प्रधानाध्यापिका श्रीम. मीनाक्षी झा, सुधीर झा, आशीष झा, आयोजक अमित झा, उपस्थित थे।

इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स फॉर अफर्मेटिव एक्शन (ICCAA) ने सिंगल डेब्ट के साथ साझेदारी की

मुंबई संवाददाता

मुंबईः इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स फॉर अफर्मेटिव एक्शन व सिंगल डेब्ट के साझेदार संजय दुबे और हरीश परमार ने मुंबई प्रेस क्लब में पत्रकारों से बात करते हुवे कहा की विभिन्न बैंकों से लिए गए लोन के ऋण चुकाने के लिए आर्थिक रूप से संघर्ष कर रहे लोगों की मदत के लिए सिंगल डेब्ट व् इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स फॉर अफर्मेटिव एक्शन मुंबई में सभी कानूनी लड़ाई लड़ने के लिए तैयार है बता दे की इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स फॉर अफर्मेटिव एक्शन देश की नामी ग्रामी चैंबर्स में से एक है। ICCAA का एक उद्देश्य है की सहिता परधान करना जब की देखा गया है की कई बार बैंकों के नाम पर रिकवरी एजेंट लोन लेने वालों को परेशान करते हैं और धमकाते हैं ऐसी स्थिति तब आती है जब लोन लेने वाले किसी वजह से वक्त पर किस्त नहीं भर पाते। ऐसी घटनाएं भी सामने आती हैं जब बैंक के रिकवरी एजेंट लोन लेने वाले की गाड़ी या कोई सामान भी उठा लेते हैं। बिना कोर्ट के आदेश के या फिर ज़बरदस्ती करके मजबूर करते है. रिकवरी एजेंट जब कानून अपने हाथ में लेकर ग्राहकों को धमकाते रहते है ऐसी स्थिति में आपके सामने क्या-क्या विकल्प होते हैं। ऐसे में सिंगल डेब्ट ऐसे मामले को अपने वकीलों के साथ कानूनी लड़ाई लड़ता है बैंक, फाइनैंस कंपनी या लोन देनदार समय पर किस्त न मिलने पर ग्राहक या उसके रिश्तेदार को धमकाने लगते हैं। उनके पास रिकवरी एजेंट के

फोन आते हैं, मानसिक प्रताड़ना या धमकी से गुजरना पड़ता है। ऐसी स्थिति में ग्राहक यानी लोन लेनदार सीधे http://SingleDebt.ग्ह सिंगल डेब्ट की मदद से शिकायत करसकता है शिकायत कर सकता है, जिसके बाद रिकवरी एजेंट के खिलाफ कानूनी कार्रवाई हो सकती है।

जब बैंक आदि से लोन लिया जाता है तो बैंक और ग्राहक के बीच आर्बिट्रेशन ऐक्ट 1996 के तहत भी करार होता है किसी विवाद की स्थिति में मामला आर्बिट्रेटर के सामने जाएगा। ऐसी स्थिति में अगर किसी की किस्त का पेमेंट नहीं होता है तो बैंक या लोन देनदार संस्थान को अधिकार है कि वह आर्बिट्रेशन में मामला ले जाए और कॉम्पिटेंट अथॉरिटी के आदेश के तहत कानूनी कार्रवाई करे आदेश के मुताबिक वह पुलिस की मदद से कार आदि उठा सकते हैं। साथ ही भुगतान न होने की स्थिति में बैंक व वित्तीय संस्थान रिकवरी के लिए सिविल कोर्ट का दरवाजा खटखटा सकते हैं। संजय दुबे और हरीश परमार ने

ने बताया कि बैंक और रिकवरी एजेंट के लिए आरबीआई ने गाइडलाइंस भी जारी कर रखी हैं इसके तहत अगर कोई भी बैंक किसी रिकवरी एजेंट की नियुक्ति करता है तो उसके पीछे मकसद यह होता है कि वह ग्राहक को किस्त देने के लिए मनाए लेकिन किसी ग्राहक को फोन पर या सामने आकर धमकी नहीं दे सकते। इसके अलावा वह एजेंट ग्राहक के रिश्तेदार या दोस्त या पड़ोसी को भी फोन नहीं कर सकता अगर वह धमकाए तो शिकायत संबंधित थाने में या फिर आरबीआई में की जा सकती है।

महाराष्ट्र की नई कैबिनेट में रिपब्लिकन पार्टी को जगह दी जाए- केंद्रीय राज्य मंत्री रामदास आठवले

सलीम सैयद

मुंबईः विपक्ष के नेता देवेंद्र फडणवीस ने राजनीति में आदर्श भूमिका निभाई है देवेंद्र फडणवीस एकनाथ शिंदे को राज्य के नए मुख्यमंत्री के रूप में मौका देकर राज्य में किंगमेकर की भूमिका में आ गए हैं हम देवेंद्र फडणवीस को महाराष्ट्र के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के लिए दिल से बधाई देते हैं रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामदास आठवले ने मांग की है कि एकनाथ शिंदे की नई कैबिनेट में रिपब्लिकन पार्टी को जगह दी जाए।

महाराष्ट्र को पूरा भरोसा था कि देवेंद्र फडणवीस 50 विधायकों के समर्थन से मुख्यमंत्री बनेंगे, जो एकनाथ शिंदे के साथ थे, जब भाजपा के पास 106 विधायक खुद और निर्दलीय के समर्थन से चुने गए थे। हालांकि, देवेंद्र फडणवीस ने अप्रत्याशित रूप से एकनाथ शिंदे को महाराष्ट्र के नए मुख्यमंत्री के रूप में मौका दिया है। देवेंद्र फडणवीस ने बड़ी सोच दी है और उन्होंने दिखा दिया है कि हमें मुख्यमंत्री बनने का मोह नहीं है देवेंद्र फडणवीस ने अपने सहयोगियों को मुख्यमंत्री का पद देने के लिए एक महान विचार के साथ आया है और महाराष्ट्र की राजनीति में एक नया मानक स्थापित किया है सत्ता के इस संक्रमण में रिपब्लिकन पार्टी सहयोगी के रूप में भाजपा के साथ रही है। रिपब्लिकन पार्टी की ओर से नए मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को हार्दिक बधाई और प्रदेश के नए किंगमेकर देवेंद्र फडणवीस को हार्दिक बधाई।

ऑल इंडिया उलेमा बोर्ड द्वारा महात्मा ज्योतिबा फुले जन आरोग्य योजना अंतर्गत मेडिकल कार्ड कैंप 2,और 3, जुलाई को मुंबई में

जनता की सेवा में फिर से एक बार आरिफ मेमन बापू

'गरीब बेसहारा लोग इस आरोग्य योजना का लाभ उठा सकेंगे'

सलीम सय्यद

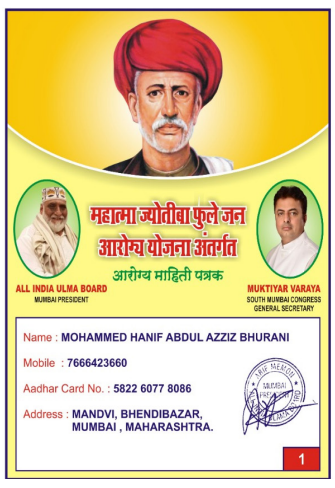

मुंबईः देश में कई ऐसे लोग हैं, जिनके पास पैसा नहीं होने के कारण बीमारी से जूझते रहते हैं अपनी बीमारी का इलाज नहीं करवा पाते हैं ग़रीब लोग बीमारी से जूझते हुए अपनी जान भी गंवा देते हैं ऐसे लोगों को सहायता प्रदान करवाने के लिए महात्मा ज्योतिबा फूले जन आरोग्य योजना की शुरुआत ऑल इंडिया उलेमा बोर्ड के मुंबई अध्यक्ष आरिफ मेमन बापू के नेतृत्व में की गई इस योजना के अंतर्गत निःशुल्क इलाज की व्यवस्था उपलब्ध करवाई है। यह योजना ग़रीब परिवारों के लिए कम पैसों में इलाज करवाने के लिए लागू की गई महात्मा ज्योतिबा फुले जन आरोग्य योजना 2022 के अंतर्गत कई प्रकार के इलाज कम पैसा में करवाएं जाएंगी इस योजना में कई घातक बीमारियां जैसेः-स्त्री रोग, कैंसर रोग, मोतियाबिंद इत्यादि शामिल बीमारियों को जोड़ा गया है इन बिमारियों में जो ग़रीब परिवार अपना इलाज कराने में सक्षम नहीं है उन परिवारों के लिए इस योजना के अंतर्गत इन सभी बीमारियों के इलाज के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। इस योजना का उद्देश्य ग़रीब वर्ग के लोगों को कम खर्च में बेहतर इलाज उपलब्ध करवाना है इसी योजना

के अंतर्गत कई लोगों को फ्री चिकित्सा सेवा भी उपलब्ध करवाई जाती है दवाई से लेकर ऑपरेशन तक कोई भी चार्ज नहीं लिया जाता है इस योजना का मुख्य फायदा महाराष्ट्र के परिवारों के लोगों को मिल रहा है। उलेमा बोर्ड द्वारा महात्मा ज्योतिबा फुले जन आरोग्य योजना के लाभ द्वारा महात्मा ज्योतिबा फुले जन आरोग्य योजना के लाभ 2, और 3, जुलाई जामनगर हलाई मेमन जमात खाना में सुबह 11 बजे से शाम 5:00 बजे तक यह कार्ड आपको निःशुल्क लॉग इन करवाएया जाएगा।

गुलमोहर रोड, इरला मस्जिद कॉप्लेक्स, जेवीपीडी स्कीम, मुंबई ४९ स्थित इरला मस्जिद कम्यूनिटी हॉल में शादी, बर्थडे जैसे शुभकार्यों के लिए हॉल की ओपनिंग की गयी है। इस हॉल में लगभग ५०० लोगों की कैपेसिटी है। पार्किंग की उत्तम सुविधा है। महिला के लिए बैठने की सुविधा है। मॉर्डन वाशरुम फैसिलीटी, इस हॉल में डेकोरेशन, स्टेज, कैटरिंग व अन्य सुविधाओं से सुसज्जित है यह हॉल. संपर्क करें - २६२४४०८०/ ७७३८६४९७४२/९५९४४२९७३०

Learn Spoken Arabic

in six Months

Play Group For Tiny Tots

Contact Jannat - 7710864086

ELITE TUTORIALS

For Bright Future

Invites students from Std. I to X (SSC, ICSE IGCSE, CBSE all Subjects) to excel in their studies

We do Conduct English Speaking Courses

Free Demo Lectures for 3 days

ASLAM SIR : 9004346065, 9867029757

NAFILA : 9833534023

SABINA : 9819528420

Room No. 5, SRA Bldg No. 6, Ground Floor, Opp. Sagar City, Andheri (West

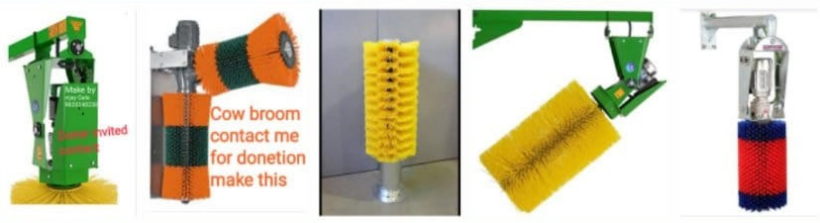

Manufacture by

Vijay Gala

Village - Chhasra

Andheri (W), Mumbai

9820240230

THE LOOK'S
UNISEX SALON

SPECIAL OFFER @ SPECIAL PRICE

FEMALE

Global Hair Colour With Highlights And Hair Cut	4999/-
Global Hair Colour	2999/-
Highlight	2499/-
Hair Spa + Hair Cut + Hair Blow Dry	999/-
Hair Cut & Hair Wash	349/-
Head Massage + hair Spa	599/-
Facial, Waxing (Full Hands, Full Legs And Under Arms), Eyebrow, Upper Lips, Forehead	2199/-
Clean-up, Bleach,Manicure,Pedicure	1799/-

MALE

Hair Cut, Hair Colour, Manicure & Pedicure	1499/-
Hair Spa + Hair Cut + Hair Blow Dry	499/-
Head Massage + Hair Spa	499/-

Book Your Appointment Via Whatsapp +919594999930

THE LOOK'S
UNISEX SALON

SPECIAL OFFER @ SPECIAL PRICE

Male Hair Cut

₹99/-

Female Hair Cut And Blow Dry

₹199/-

Book Your Appointment Via Whatsapp +919594999930

पुलिस आयुक्त के रूप में विवेक फणसलकर

मुंबई पुलिस आयुक्त के रूप में विवेक फणसलकर

पालघर जिला संवाददाता दिव्या बागी

विवेक फणसलकर को मुंबई का पुलिस कमिश्नर नियुक्त किया गया है। संजय पांडे का कार्यकाल समाप्त होने के बाद विवेक फणसलकर को मुंबई पुलिस आयुक्त के रूप में चुना गया है।

संजय पांडे गुरुवार ३० जून को सेवानिवृत्त होंगे। उसके बाद विवेक फणसलकर संजय पांडे की जगह लेंगे।

२०१८ में परमबीर सिंह के बाद विवेक फणसलकर को ठाणे का पुलिस कमिश्नर नियुक्त किया गया था। बाद में उन्हें मुंबई में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कानून और व्यवस्था) के रूप में तैनात किया गया था। ठाणे में उनके शानदार प्रदर्शन को देखते हुए राज्य सरकार ने उनकी जगह बिना उनका कार्यकाल बढ़ा दिया था। इस नियुक्ति से पहले, फणसलकर २०१६ से रिश्वत रोकथाम, मुंबई के अतिरिक्त महानिदेशक थे। वह दो साल तक ठाणे शहर के आयुक्त रहे। विवेक फणसलकर १९८९ बैच के आईपीएस अधिकारी हैं। उन्होंने राज्य के आतंकवाद विरोधी दस्ते के अतिरिक्त महानिदेशक के रूप में कार्य किया है। वह रिश्वत रोकथाम विभाग के प्रमुख भी थे। वे सख्त अनुशासन और ईमानदारी के अपने गुणों के लिए जाने जाते हैं

कोरोना आपदा से बढ़ा बच्चों में मोटापा!

मुंबई- कोरोना महामारी के चलते बीते दो सालों से स्कूल बंद थे। इसके चलते स्कूली छात्र पूरी तरह से घरों में कैद हो गए थे। इस स्थिति में उनकी शारीरिक गतिविधियां और भाग दौड़ भी बंद हो गई थी। इतना ही नहीं ऑनलाइन हो रही पढ़ाई का भी छात्रों पर खासा टेंशन नहीं था। इसका असर यह रहा कि बड़ी संख्या में स्कूली छात्र मोटापे के शिकार हो गए हैं। यह जानकारी स्कूलों में शिक्षकों और चिकित्सकों के निरीक्षण में सामने आया है। पिछले शैक्षणिक वर्ष के अंतिम कुछ महीनों को छोड़कर बीते दो शैक्षणिक वर्ष २०२०-२१ और २०२१-२२ में वास्तविक रूप से स्कूल नहीं भर पाए थे। इस समयावधि में छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा मुहैया कराई जा रही थी, इसलिए उन्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं पड़ी। सारी शिक्षा मोबाइल पर थी। दो सालों से बगीचे और मैदान भी बंद थे। ऐसे में अधिकांश बच्चे व्यायाम या खेलने के लिए भी घर से बाहर नहीं निकल पाए। दिनभर घर में रहना, किसी भी समय खाना खाना और पढ़ाई के लिए मोबाइल पर बैठना बच्चों की दिनचर्या हो गई थी। इसका असर बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ा है। वहीं करीब दो साल के बाद हाल ही में स्कूल शुरू हुए हैं। इसलिए छात्रों में बदलाव शिक्षक स्पष्ट रूप से महसूस कर रहे हैं, कुछ ऐसा ही अनुभव डॉक्टरों का भी है।

रथयात्रा, एक धार्मिक महोत्सव है, जिसे १ जुलाई, २०२२, दिन शुक्रवार को मनाया जाएगा।

यह एक सार्वजनिक जुलूस होता है जिसमें रथ पर भगवान जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा के सुदर्शन की रथयात्रा निकाली जाती है। यह त्योहार पूर्व भारतीय उड़ीसा राज्य के पूरे क्षेत्र में मनाई जाती है, जिसे पुरुषोत्तम पुरी, शंख - क्षेत्र अथवा श्री क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है ।

यह भगवान श्री जगन्नाथ जी की मुख्य लीला भूमि है उत्कल प्रदेश के प्रधान देवता श्री जगन्नाथ जी ही माने जाते हैं । यहां के लोग वैष्णव धर्म का पालन करते हैं । यह मान्यता है की, राधा और श्रीकृष्ण की युगल मूर्ति के प्रतीक स्वयं श्री जगन्नाथ जी की मूर्ति है । अतः इसी प्रतीक के रूप में ही श्री जगन्नाथ जी से संपूर्ण जगत का उद्भव हुआ है। यह पूर्ण परात्पर भगवान हैं । और श्रीकृष्ण उनकी कला का मात्र एक रूप है ।

यह मान्यता श्री महाप्रभु के शिष्य पंच शाखाओं की है। श्री जगन्नाथ जी की रथ यात्रा, आषाढ़ के शुक्ल द्वितीया को जगन्नाथपुरी में आरंभ होती है ।

इसमें भाग लेने के लिए हजारों - लाखों की संख्या में बाल, वृद्ध, नर व नारी देश के सुदूर प्रांत से आते हैं । यहां की मूर्ति स्थापत्य कला और समुद्र का मनोरम किनारा पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है । कोणार्क का अद्भुत सूर्य मंदिर यहां पर विद्यमान है। अन्य बहुत सारे दर्शनीय स्थल यहां मौजूद है। स्कंद पुराण में यह कहा गया है, कि रथ यात्रा में जो व्यक्ति श्री जगन्नाथ जी के नाम का कीर्तन करता हुआ गुंदीचा नगर तक जाता है वह पुनर्जन्म से मुक्त हो जाता है। साधक व प्रेमी जन प्रणाम करते हैं और मार्ग की धूल कीचड़ आदि में लोट लोट कर जाते हैं, वे लोग सीधे भगवान शिव विष्णु के स्वर्ग लोक में जाते हैं, ऐसी मान्यता है। जो व्यक्ति गुंडिचा मंडप में रथ पर विराज तीनों मूर्तियों का दर्शन करते हैं, जो दक्षिण दिशा को आते हैं, यह दर्शन करते हैं वह मोक्ष को प्राप्त होते हैं । रथयात्रा एक ऐसा सार्वजनिक पर्व है जिसमें भगवान जगन्नाथ स्वयं चलकर जनता के बीच आते हैं और उनके सुख दुख में सहभागी होते हैं । 'सब मनुष्य मेरी प्रजा है', यह भगवान के शब्द माने जाते हैं । भगवान जगन्नाथ पतित पावन हैं।

जगन्नाथ पुरी का इतिहास अनूठा है। रथ यात्रा में भगवान जगन्नाथ जी को दशावतार के रूप में पूजा जाता है । उनमें विष्णु, कृष्ण और बामन भी हैं । वहीं बुध भी हैं । यानि भगवान जगन्नाथ विभिन्न धर्मों मतों और विश्वासों का अद्भुत समन्वय है । जगन्नाथ मंदिर में पूजा पाठ, दैनिक आचार व्यवहार, वित्तीय नीति

और व्यवस्थाओं को शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन यहां तक कि तांत्रिकों ने भी प्रभावित किया है।

इसीलिए जगन्नाथ मंदिर धार्मिक सहिष्णुता और समन्वयता का अद्भुत उदाहरण है । सांख्य दर्शन के अनुसार, रथ का रूप श्रद्धा के रस से परिपूर्ण होता है । रथ का निर्माण बुद्धि, चित्त और अहंकार से होता है । ऐसे रथ रूपी शरीर में आत्मा रूपी भगवान जगन्नाथ विराजमान होते हैं। यह यात्रा शरीर और आत्मा के मेल की ओर संकेत करता है और आत्म दृष्टि बनाए रखने की प्रेरणा देता है। रथ यात्रा के समय रथ का संचालन आत्मा युक्त शरीर करती है जो जीवन यात्रा का प्रतीक है। यद्यपि शरीर में आत्मा होती है तो भी वह स्वयं संचालित नहीं होती बल्कि वह माया से संचालित होती है । इसी प्रकार भगवान जगन्नाथ के विराजमान होने पर भी रथ स्वयं नहीं चलता बल्कि उसे खींचने के लिए लोक शक्ति की आवश्यकता होती है । यह रथयात्रा पर्व पूरे भारतवर्ष में लगभग सभी नगरों में श्रद्धा और प्रेम के साथ मनाया जाता है । रथयात्रा के इस महोत्सव में जो सांस्कृतिक और पौराणिक महत्व उपस्थित होते हैं, वह सभी भाईचारे और एकता के परिप्रेक्ष्य में होते हैं । यहां वसुधैव कुटुंबकम का बहुत बड़ा संदेश जाता है ।

प्यारी नामक सत्य घटना पर आधारित किताब पर अब बनेगी फिल्म !

के । रवि (दादा) ,,

भोपाल । देश ऑर दुनिया में जो घटीत होता उसि को मद्देनजर रखकर अब तक मनोरंजन की दूनियां ने सैकडो फिल्मे बन चुकी है । अब यह भी देखिये की फिल्म अभिनेता और दिल्ली ४७ ख्र् के मुख्य नायक . रजनीश दुबे की किताब ,'प्यारी' एक सत्यकथा पर जल्दी फिल्म का निर्माण शुरू किया जाएगा ।

अपने भारत देश के मध्यप्रदेश बैरसिया के तरावली गाँव की सच्ची घटना पर आधारित 'प्यारी' तरावली एक सत्य कथा, नामक किताब में अस्तित्व प्रकाशन के माध्यम से प्रकाशित और वितरित होने जा रही है, इसके लेखक, कलाकार और निर्देशक, स्वयं . रजनीश दुबे ही है , जिनका जन्म स्थान भी मध्य प्रदेश का बैरसिया है । प्यारी' तरावली एक सत्य कथा, नामक यह किताब अस्तित्व प्रकाशन के माध्यम से प्रकाशित और वितरित होने जा रही है । यह किताब हिंदी और इंग्लिश दोनो भाषा में उपलब्ध है जिसे आप अमेजन, फिल्पकार्टऔर अस्तित्व प्रकाशन से ऑर्डर भी कर सकते हैं और ऑ नलाइन प्लेटफार्म पर इस किताब को पढ़ा भी जा सकता है। कहानी की रोचकता देखते हुए, मुंबई में इस किताब पर फिल्म निर्माण का कार्य भी शुरू हो गया है। बताते चलें कि रजनीश ने शाहरुख खान के साथ भी एक फिल्म में काम किया है और वे कई टीवी शो भी होस्ट कर चुके हैं इससे पहले आखरी बार वह दिल्ली ४७ किलोमीटर में अभिनय करते नजर आए थे।

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक : जितेंद्र राजाराम सालुंखे ने सोमानी प्रिंटिंग प्रेस,गाला नं. 3-4 , अमीन इंडस्ट्रीयल इस्टेट, सोनावाला क्रास रोड नं. 2,नियर जवाहर नगर फाटक ब्रिज,गोरेगांव (पूर्व),मुंबई 63, महाराष्ट्र से छपवाकर डी/कुंज, बिहार, रमेश नगर, जय भवानी मार्ग, अंबोली, मुंबई-400058 से प्रकाशित किया। मोबा.9833326393. RNI NO: MAHHIN/2006/26277. Email-rmsamachar@gmail.com